

रविवार 27 जुलाई, 2025

विषय — सत्य

स्वर्ण पाठः यूहन्ना 8: 32

"और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।"

उत्तरदायी अध्ययनः भजन संहिता 19 : 7-11

भजन संहिता 117 : 1, 2

- ⁷ यहोवा की व्यवस्था खरी है, वह प्राण को बहाल कर देती है; यहोवा के नियम विश्वासयोग्य हैं, साधारण लोगों को बुद्धिमान बना देते हैं;
- ⁸ यहोवा के उपदेश सिद्ध हैं, हृदय को आनन्दित कर देते हैं; यहोवा की आज्ञा निर्मल है, वह आंखों में ज्योति ले आती है;
- ⁹ यहोवा का भय पवित्र है, वह अनन्तकाल तक स्थिर रहता है; यहोवा के नियम सत्य और पूरी रीति से धर्ममय हैं।
- ¹⁰ वे तो सोने से और बहुत कुन्दन से भी बढ़कर मनोहर हैं; वे मधु से और टपकने वाले छत्ते से भी बढ़कर मधुर हैं।
- ¹¹ और उन्हीं से तेरा दास चिताया जाता है; उनके पालन करने से बड़ा ही प्रतिफल मिलता है।
- ¹ हेजाति जाति के सब लोगोंयहोवा की स्तुति करो! हे राज्य राज्य के सब लोगो, उसकी प्रशंसा करो!
- ² क्योंकि उसकी करूणा हमारे ऊपर प्रबल हुई है; और यहोवा की सच्चाई सदा की है याह की स्तुति करो!

पाठ उपदेश

बाइबल

1. नीतिवचन 3 : 1-5, 21-23

- ¹ हेमेरे पुत्र, मेरी शिक्षा को न भूलना; अपने हृदय में मेरी आज्ञाओं को रखे रहना;
- ² क्योंकि ऐसा करने से तेरी आयु बढ़ेगी, और तू अधिक कुशल से रहेगा।
- ³ कृपा और सच्चाई तुझ से अलग न होने पाएं; वरन उन को अपने गले का हार बनाना, और अपनी हृदय रूपी पटिया पर लिखना।
- ⁴ और तू परमेश्वर और मनुष्य दोनों का अनुग्रह पाएगा, तू अति बुद्धिमान होगा॥
- ⁵ तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना।
- ²¹ हे मेरे पुत्र, ये बातें तेरी दृष्टि की ओट न हाने पाएं; खरी बुद्धि और विवेक की रक्षा कर।

- 22 तब इन से तुझे जीवन मिलेगा, और ये तेरे गले का हार बनेंगे।
23 और तू अपने मार्ग पर निडर चलेगा, और तेरे पांव में ठेस न लगेगी।

2. 1 राजा 18 : 16 (अहाब चला)-26, 29, 30, 33-39, 41, 46 (से ;)

- 16 अहाब एलिय्याह से मिलने चला।
17 एलिय्याह को देखते ही अहाब ने कहा, हे इस्राएल के सताने वाले क्या तू ही है?
18 उसने कहा, मैं ने इस्राएल को कष्ट नहीं दिया, परन्तु तू ही ने और तेरे पिता के घराने ने दिया है; क्योंकि तुम यहोवा की आज्ञाओं को टाल कर बाल देवताओं की उपासना करने लगे।
19 अब दूत भेज कर सारे इस्राएल को और बाल के साढ़े चार सौ नबियों और अशेरा के चार सौ नबियों को जो ईज़ेबेल की मेज पर खाते हैं, मेरे पास कर्म्मेल पर्वत पर इकट्ठा कर ले।
20 तब अहाब ने सारे इस्राएलियों को बुला भेजा और नबियों को कर्म्मेल पर्वत पर इकट्ठा किया।
21 और एलिय्याह सब लोगों के पास आकर कहने लगा, तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे, यदि यहोवा परमेश्वर हो, तो उसके पीछे हो लो; और यदि बाल हो, तो उसके पीछे हो लो। लोगों ने उसके उत्तर में एक भी बात न कही।
22 तब एलिय्याह ने लोगों से कहा, यहोवा के नबियों में से केवल मैं ही रह गया हूँ; और बाल के नबी साढ़े चार सौ मनुष्य हैं।
23 इसलिये दो बछड़े लाकर हमें दिए जाएं, और वे एक अपने लिये चुनकर उसे टुकड़े टुकड़े काट कर लकड़ी पर रख दें, और कुछ आग न लगाएं; और मैं दूसरे बछड़े को तैयार करके लकड़ी पर रखूंगा, और कुछ आग न लगाऊंगा।
24 तब तुम तो अपने देवता से प्रार्थना करना, और मैं यहोवा से प्रार्थना करूंगा, और जो आग गिराकर उत्तर दे वही परमेश्वर ठहरे। तब सब लोग बोल उठे, अच्छी बात।
25 और एलिय्याह ने बाल के नबियों से कहा, पहिले तुम एक बछड़ा चुनकर तैयार कर लो, क्योंकि तुम तो बहुत हो; तब अपने देवता से प्रार्थना करना, परन्तु आग न लगाना।
26 तब उन्होंने उस बछड़े को जो उन्हें दिया गया था ले कर तैयार किया, और भोर से ले कर दोपहर तक वह यह कह कर बाल से प्रार्थना करते रहे, कि हे बाल हमारी सुन, हे बाल हमारी सुन! परन्तु न कोई शब्द और न कोई उत्तर देने वाला हुआ। तब वे अपनी बनाई हुई वेदी पर उछलने कूदने लगे।
29 वे दोपहर भर ही क्या, वरन भेंट चढ़ाने के समय तक नबूवत करते रहे, परन्तु कोई शब्द सुन न पड़ा; और न तो किसी ने उत्तर दिया और न कान लगाया।
30 तब एलिय्याह ने सब लोगों से कहा, मेरे निकट आओ; और सब लोग उसके निकट आए। तब उसने यहोवा की वेदी की जो गिराई गई थी मरम्मत की।
33 तब उसने वेदी पर लकड़ी को सजाया, और बछड़े को टुकड़े टुकड़े काटकर लकड़ी पर धर दिया, और कहा, चार घड़े पानी भर के होमबलि, पशु और लकड़ी पर उण्डेल दो।
34 तब उसने कहा, दूसरी बार वैसा ही करो; तब लोगों ने दूसरी बार वैसा ही किया। फिर उसने कहा, तीसरी बार करो; तब लोगों ने तीसरी बार भी वैसा ही किया।
35 और जल वेदी के चारों ओर बह गया, और गड़हे को भी उसने जल से भर दिया।

- ³⁶ फिर भेंट चढ़ाने के समय एलिय्याह नबी समीप जा कर कहने लगा, हे इब्राहीम, इसहाक और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा! आज यह प्रगट कर कि इस्राएल में तू ही परमेश्वर है, और मैं तेरा दास हूँ, और मैं ने ये सब काम तुझ से वचन पाकर किए हैं।
- ³⁷ हे यहावा! मेरी सुन, मेरी सुन, कि ये लोग जान लें कि हे यहोवा, तू ही परमेश्वर है, और तू ही उनका मन लौटा लेता है।
- ³⁸ तब यहोवा की आग आकाश से प्रगट हुई और होमबलि को लकड़ी और पत्थरों और धूलि समेत भस्म कर दिया, और गड़हे में का जल भी सुखा दिया।
- ³⁹ यह देख सब लोग मुंह के बल गिरकर बोल उठे, यहोवा ही परमेश्वर है, यहोवा ही परमेश्वर है।
- ⁴¹ फिर एलिय्याह ने अहाब से कहा, उठ कर खा पी, क्योंकि भारी वर्षा की सनसनाहट सुन पडती है।
- ⁴⁶ तब यहोवा की शक्ति एलिय्याह पर ऐसी हुई; कि वह कमर बान्धकर अहाब के आगे आगे यिजेरल तक दौड़ता चला गया।

3. भजन संहिता 119 : 160

- ¹⁶⁰ तेरा सारा वचन सत्य ही है; और तेरा एक एक धर्ममय नियम सदा काल तक अटल है॥

4. फिलिप्पियों 4 : 4-9

- ⁴ प्रभु में सदा आनन्दित रहो; मैं फिर कहता हूँ, आनन्दित रहो।
- ⁵ तुम्हारी कोमलता सब मनुष्यों पर प्रगट हो: प्रभु निकट है।
- ⁶ किसी भी बात की चिन्ता मत करो: परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और बिनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख अपस्थित किए जाएं।
- ⁷ तब परमेश्वर की शान्ति, जो समझ से बिलकुल परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी॥
- ⁸ निदान, हे भाइयों, जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरणीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं, और जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं, निदान, जो जो सदगुण और प्रशंसा की बातें हैं, उन्हीं पर ध्यान लगाया करो।
- ⁹ जो बातें तुम ने मुझ से सीखीं, और ग्रहण की, और सुनी, और मुझ में देखीं, उन्हीं का पालन किया करो, तब परमेश्वर जो शान्ति का सोता है तुम्हारे साथ रहेगा॥

5. 3 यूहन्ना: 2-4

- ² हे प्रिय, मेरी यह प्रार्थना है; कि जैसे तू आत्मिक उन्नति कर रहा है, वैसे ही तू सब बातों में उन्नति करे, और भला चंगा रहे।
- ³ क्योंकि जब भाइयों ने आकर, तेरे उस सत्य की गवाही दी, जिस पर तू सचमुच चलता है, तो मैं बहुत ही आनन्दित हुआ।
- ⁴ मुझे इस से बढ़कर और कोई आनन्द नहीं, कि मैं सुनूँ, कि मेरे लड़के-बाले सत्य पर चलते हैं।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 7 : 13 (यह)-21, 27-8

विचारकों का समय आ गया है। सत्य, सिद्धांतों और समय-सम्मानित प्रणालियों से स्वतंत्र, मानवता के द्वार पर दस्तक देता है। अतीत के साथ संतोष और भौतिकवाद की ठंडी परम्परा के बीच टकराव कम हो रहा है। भगवान की अज्ञानता अब विश्वास के रास्ते का पत्थर नहीं है। आज्ञाकारिता का एकमात्र ज़मानता उसी की एक सही आशंका है जिसे जानने के लिए जीवन अनन्त है। यद्यपि साम्राज्य गिरते हैं, "प्रभु हमेशा के लिए शासन करेंगे।"

जब से लेखिका ने रोग और पाप दोनों के उपचार में सत्य की शक्ति की खोज की है, तब से उसकी प्रणाली का पूरी तरह से परीक्षण किया गया है और उसे कम नहीं पाया गया है; लेकिन ईसाई विज्ञान की ऊंचाइयों तक पहुंचने के लिए, मनुष्य को इसके दिव्य सिद्धांत का पालन करते हुए रहना होगा। इस विज्ञान की पूर्ण शक्ति विकसित करने के लिए, भौतिक इंद्रियों की विसंगतियों को आध्यात्मिक भावना के सामंजस्य के रूप में प्रस्तुत करना होगा, जैसे कि संगीत का विज्ञान गलत स्वरों को सही करता है और ध्वनि को मधुर सामंजस्य प्रदान करता है।

2. 293 : 28-31

क्रिश्चियन साइंस सत्य और उसके वर्चस्व, सार्वभौमिक सद्भाव, ईश्वर की पवित्रता, अच्छाई और बुराई की बुराई को प्रकाश में लाता है।

3. 304 : 3-21

यह ज्ञान और असत्य विश्वास है, भौतिक वस्तुओं पर आधारित है, जो आध्यात्मिक सौंदर्य और गुडई को छिपाते हैं। यह समझ में आया, पॉल ने कहा: "न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रादित्य, न वर्तमान, न भविष्य, न समृति, न ऊंचाई, न यशैरी और न नो और सृष्टि, हमें भगवान के प्रेम से ...।" अलग कर संभव है। " यह क्रिश्चियन साइंस का सिद्धांत है: उस दिव्य प्रेम को उसकी अभिव्यक्ति, या वस्तु से वंचित नहीं किया जा सकता है; वह आनन्द दुःख में नहीं बदल सकता, क्योंकि दुःख आनन्द का स्वामी नहीं है; वह अच्छाई कभी स्पष्ट नहीं कर सकता; वह पदार्थ कभी भी मन उत्पन्न नहीं कर सकता है और न ही जीवन का परिणाम मृत्यु है। पूर्ण पुरुष - भगवान द्वारा शासित, उनका सिद्ध सिद्धांत - पाप रहित और शाश्वत है

सद्भाव इसके सिद्धांत द्वारा निर्मित होता है, इसके द्वारा नियंत्रित होता है और इसके साथ रहता है। ईश्वरीय सिद्धांत मनुष्य का जीवन है। इसलिए मनुष्य का सुख भौतिक इन्द्रिय के अधीन नहीं है। सत्य त्रुटि से दूषित नहीं होता है। मनुष्य में सामंजस्य उतना ही सुंदर है जितना कि संगीत में, और कलह अप्राकृतिक, असत्य है।

4. 288 : 10-26, 31-2

जब क्रिश्चियन साइंस के अंतिम भौतिक और नैतिक प्रभाव पूरी तरह से प्राप्त होते हैं, सत्य और त्रुटि, समझ और विश्वास, विज्ञान और भौतिक अर्थों के बीच संघर्ष, भविष्यद्वक्ताओं द्वारा व्यक्त और यीशु द्वारा उद्घाटन किया गया, संघर्ष और आध्यात्मिक सद्भाव शासन करेगा। जब तक बादल साफ नहीं हो जाता तब तक प्रकाश की गड़गड़ाहट और गड़गड़ाहट तेज हो सकती है और फूट पड़ सकती है। फिर देवत्व की बारिश की बूंदें धरती को तरोताजा कर देती हैं। जैसा कि सेंट पॉल कहते हैं: "परमेश्वर के लोगों के लिये विश्राम बाकी है।" (आत्मा का)।

क्रिश्चियन साइंस के मंदिर में मुख्य पत्थर निम्नलिखित अभिधारणाओं में पाए जाते हैं: कि जीवन ईश्वर है, अच्छा है, बुरा नहीं; कि आत्मा निष्पाप है, जो शरीर में नहीं मिलती; कि आत्मा भौतिक नहीं है, और न ही हो सकती है; कि जीवन मृत्यु के अधीन नहीं है; कि आध्यात्मिक वास्तविक मनुष्य का कोई जन्म नहीं है, कोई भौतिक जीवन नहीं है, और कोई मृत्यु नहीं है।

शाश्वत सत्य को नष्ट कर देता है जो लगता है कि मनुष्यों ने त्रुटि से सीखा है, और भगवान के बच्चे के रूप में मनुष्य का वास्तविक अस्तित्व प्रकाश में आता है। सत्य का प्रदर्शन शाश्वत जीवन है।

5. 372 : 26-32

क्राइस्टियन साइंस में, सत्य का एक खंडन घातक है, जबकि सत्य का एक औचित्य है और उसने हमारे लिए जो किया है वह एक प्रभावशाली मदद है। यदि गर्व, अंधविश्वास या कोई त्रुटि प्राप्त लाभों की ईमानदार मान्यता को रोकती है, तो यह बीमार लोगों की वसूली और छात्र की सफलता में बाधा होगी।

6. 493 : 1 (क्रिश्चियन)-2, 6-8

क्रिश्चियन साइंस तेजी से सच को विजयी दिखाता है ... भौतिक ज्ञान के सभी प्रमाण और भौतिक ज्ञान से प्राप्त सभी ज्ञान विज्ञान को सभी चीजों के अमर सत्य तक पहुंचाना चाहिए।

7. 287 : 32 (सत्य)-8

सत्य को त्रुटि से दूषित नहीं किया जा सकता। यह कथन कि सत्य वास्तविक है, अनिवार्यतः इससे संबंधित कथन को भी शामिल करता है कि त्रुटि, अर्थात् सत्य की असमानता, अवास्तविक है।

सत्य और त्रुटि के बीच काल्पनिक युद्ध केवल आध्यात्मिक इंद्रियों के साक्ष्य और भौतिक इंद्रियों की गवाही के बीच मानसिक संघर्ष है, और आत्मा और मांस के बीच यह युद्ध सभी प्रश्नों को ईश्वरीय प्रेम में विश्वास और समझ के माध्यम से सुलझाएगा।

8. 450 : 15 (कुछ)-26

कुछ लोग धीरे-धीरे सत्य के स्पर्श में आ जाते हैं। संघर्ष के बिना कुछ उपज, और बहुत से लोग यह मानने से हिचकते हैं कि उन्होंने उपज दी है; लेकिन जब तक यह स्वीकार नहीं किया जाता है, बुराई अच्छाई से ऊपर अपने आप को घमण्ड करेगी। क्रिश्चियन साइंटिस्ट ने बुराई, बीमारी और मृत्यु को कम करने के लिए सूचीबद्ध किया है;

और वह उनकी नीयत और भगवान की भलाई या अच्छेपन को समझकर उन्हें दूर करेगा। उसके प्रति बीमार होना किसी पाप से कम नहीं है, और वह उन दोनों को ईश्वर की शक्ति को समझकर उन्हें ठीक करता है। क्रिश्चियन साइंटिस्ट जानते हैं कि वे विश्वास की त्रुटियाँ हैं, जो सत्य को नष्ट कर सकता है।

9. 254 : 10-15

जब हम धैर्यपूर्वक ईश्वर की प्रतीक्षा करते हैं और सत्य की तलाश करते हैं, तो वह हमारे मार्ग का निर्देशन करता है। अपूर्ण नश्वर धीरे-धीरे आध्यात्मिक पूर्णता के चरम को समझ लेते हैं; लेकिन दुर्दशा शुरू करने और होने की बड़ी समस्या को प्रदर्शित करने के संघर्ष को जारी रखने के लिए, बहुत कुछ कर रहा है।

10. 371 : 22-32

क्रिश्चियन साइंस के दावों पर जोर देते हुए मैं कोई असंभव बात नहीं पूछता; परन्तु क्योंकि यह शिक्षा युग से आगे की है, इसलिए हमें इसके आध्यात्मिक प्रकटीकरण की आवश्यकता से इनकार नहीं करना चाहिए। विज्ञान और ईसाई धर्म के माध्यम से मानव जाति में सुधार होगा। दौड़ को बढ़ाने के लिए आवश्यकता इस तथ्य के लिए पिता है कि माइंड यह कर सकता है; क्योंकि मन अशुद्धता के बजाय पवित्रता प्रदान कर सकता है, कमजोरी के बजाय ताकत और बीमारी के बजाय स्वास्थ्य। सत्य संपूर्ण व्यवस्था में परिवर्तनकारी है, और इसके "हर तिनका को पूरा" कर सकते हैं।

11. 254 : 27-32

यदि आप सत्य के सदैव उत्तेजित लेकिन स्वास्थ्यप्रद जल पर अपनी छाल चलाते हैं, तो आप तूफानों का सामना करेंगे। आपकी अच्छाई की बात बुरी होगी। यह क्रॉस है। इसे उठाओ और सहन करो, क्योंकि इसके माध्यम से तुम जीतते हो और मुकुट पहनते हो। पृथ्वी पर तीर्थयात्री, तेरा घर स्वर्ग है; अजनबी, तुम भगवान के मेहमान हो।

12. 380 : 4 (सत्य) (से .)

सत्य हमेशा विजयी होता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन

सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6